* R E - 3 0 9 6 - 9 7 / 1 0 0 *

RE-3096-97

M. A. (Part - I & II) Examination

April/May – 2010

Hindi : Paper - I

(आधुनिक हिन्दी काव्य)

Time : Hours] [Total Marks : **70**

RE-3096

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 1**

☛ Subject Code No. : **3 0 9 6** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **1**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दोनों विभागों के उत्तर अलग–अलग उत्तर पुस्तिकाओं में लिखिये ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

१ ''कनुप्रिया' मैं नारी–प्रेम की गरिमा का मार्मिक अंकन हुआ हैं।'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

१ पंतजी ने 'ग्रामश्री' तथा 'ग्राम नारी' कविता में ग्राम–जीवन का सुन्दर चित्रण किया हैं। – चर्चा कीजिए।

२ 'निराला' रचित 'तुलसीदास' के कथा तत्व को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

२ 'संसद से सड़क तक' कविता संकलन के आधार पर भारतीय राजनीति और जनतंत्र पर प्रकाश डालिए।

३ 'साकेत' के नवम सर्ग के आधार पर नायिका का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

३ '''मधुशाला' बच्चनजी को एक उत्कृष्ट रचना है।'' सिद्ध कीजिए।

RE-3097

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 1**

☛ Subject Code No. : **3 0 9 7** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **2**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दोनों विभागों के उत्तर अलग अलग उत्तर पुस्तिकाओं में लिखिये ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

४ निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए ।

(१) 'कनुप्रिया' की प्रतीक – योजना।

अथवा

(१) 'मजदूरनी के प्रति' कविता का भाव–बोध।

(२) 'तुलसीदास' में व्यक्त भारतीय संस्कृति।

अथवा

(२) 'संसद से सडक तक' शीर्षक की सार्थकता।

(३) 'साकेत' के नवम् सर्ग में प्रकृति–वर्णन।

अथवा

(३) 'मधुशाला' का मतवालापन!

५ निम्नलिखित पद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए ।

(अ) ''मैं उस दिन लौटी क्यों
कण–कण अपने को तुम्हें
देकर रीत क्यों नहीं गई ?
तुमने तो उस रास की रात
जिसे अंशतः भी आत्मसात् किया''
उसे संपूर्ण बना कर
वापस अपने–अपने घर भेज दिया।''

अथवा

(अ) ''योनि नहीं है रे नारीं, वह भी मानवी प्रतिष्ठित
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रेहन नर पर अवसित।
द्वन्द्व क्षुधित मानव समाज, पशु जगसे भी है गर्हित,
नर–नारी के सहज स्नेहसे, सूक्ष्म वृत्ति हो विकसित।''

(ब) ''धिक! धाए तुम यों अनाहूत,
धो दिया श्रेष्ठ कूल–धर्म धूत,
राम के नहीं, काम के सूत कहलाए।
हो बिके जहाँ तुम बिना दाम,
वह नहीं और कुछ–हाड़ चाम!
कैसी शिक्षा, कैसे विराम पर आए।''

अथवा

(ब) ''भूख कौन उपजाता हैः
वह इरादा जो तरह देता है
या वह घृणा जो आँखों पर पट्टी बाँधकर
हमें घास की सट्टी में छोड़ आती है?''

(क) ''निरख सखी, ये खंजन आये,
फेरे उन मेरे रंजनने नयन इधर मन भाये!
फैला उनके तन का आतष, मन ने सरसाये,
धूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये!''

अथवा

(क) ''क्षीण, क्षुद्र, क्षण–भंगुर दुबर्ल,
मानव मिट्टी का प्याला,
भरी हुई है जिसके अंदर
कटु–मधु जीवन की हाला
मृत्यु बनी है निर्दय साकी
अपने शत–शत कर फैला
काल प्रबल हैं पीनेवाला,
संसृति है यह.....!''